P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-7* ISSUE-12* August- 2020
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

वेदोक्त सदाचार का स्वरूप
Nature of Altruistic Virtue

सारांश

Vedas are the imperishable source of virtue. Vedic culture gives more importance of virtue then the other sources. A virtuous man can lead the path of truth and attain God not a visions one. Only the virtue lift up the man. A good health can by achieve by virtue and virtue gives a long life or age.

The honey dew flow of virtue from vedas gives the virtuous knowledge of whole world.

Vedic Rishis gives message of truth, pardon, nonviolence etc to individual in vedic culture also important in present scenerio.

मुख्य शब्द : Vedas, Virtue, Pardon, Life, Truth

सन्तोष स्वामी
प्राचार्य
कला विभाग,
मरुधरा कॉलेज, पक्का भदवान
हनुमानगढ़, राजस्थान, भारत

प्रस्तावना

वेद भारतीय संस्कृति के आधार है। वेद अपौरूषेय हैं अर्थात् वेदों की रचना मनुष्य ने नहीं की। वेदों को साक्षात् ईश्वर द्वारा ही बनाया गया है। अतः वेदों में जो तत्व प्रतिपादित किये गये हैं, वे साक्षात् ईश्वर के मुखार बिन्दु हैं।

वैदिक संस्कृति की स्थापना आर्यो ने की। आर्यो का अर्थ है ''श्रेष्ठ सत्कुलोभ्दव'' अर्थात् श्रेष्ठ कुल में उत्पन्न हुए हैं। अतः उन आर्यों के आचरण को ही सदाचार की संज्ञा दी गई। भगवान मनु ने कहा है–

यस्मिन देशे य आचारः पारम्पर्यक्रमागतः।
वर्णाणां सान्तरालानां स सदाचार उच्यते।।

सरस्वती और द्वषद्वती, इन दोनों देवनदियों के बीच देवनिर्मित 'ब्रह्मवर्त' देश है। उस देश में प्रचलित ब्राह्मण आदि चार वर्णो और अवान्तर जातियों का जो परम्परागत आचार है, वहीं सदाचार है।

इस आर्यवर्त में जन्म लेने वाले ब्राह्मण लोगों से पृथ्वी के अन्य सब लोग अपने–अपने आचार–व्यवहार की शिक्षा लेते थे।

अतः सदाचार के आदि स्त्रोत हमारे वेद ही हैं। सदाचार के अलौकिक सूत्रों से वेद का भण्डारा भरा हुआ है। 'आचार्य देवो भव, मातृ देवो भव, पितृ देवा भव' आदि सदाचार की सूक्तियों के अलावा ध्यानावस्थित होकर ऋषियों ने जिन सूक्तों का विन्यास किया है, वे आदर्श ही नहीं, चिन्तनीय एवं अनुकरणीय हैं। वेदों में वर्णित नासदीय सूक्त, दानसूक्त, श्रद्धासूक्त आदि सदाचरण के मूल स्तम्भ हैं।

वेद हमारी संस्कृति का आधार है। वेदों में प्रतिपादित आचार व्यवस्था ही हमारे जीवन का सदाचार है। वेदों के द्वारा मनुष्य को दैनिक जीवन से आध्यात्मिक उन्नति तक सदाचार से मण्डित किया है।

वेदों ने भारतीय संस्कृति को जो नैतिक आचरण प्रदान किया है, उससे मनुष्य का जीवन पवित्र ही नहीं, अपितु मनुष्य जीवन का परम् कल्याण भी होता है। वैदिक सदाचार उस विशाल रत्नाकर के सदृश है, जिसका प्रत्येक रत्न मनुष्य को अभ्युदय एवं निःश्रेयस का मार्ग प्रशस्त करता है।

अध्ययन का उददेश्य

वैदिक विषयों द्वारा जो शिव संकल्प मंत्र द्वारा व्यक्ति के नैतिक गुण, सत्य, दया, दान, वहीं से यज्ञ इत्यादि का संदेश दिया गया है। उसकी वर्तमान में उपादेयता सिद्ध करना है शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य है।

सद्विचारों का आधार सात्विक आहार

''मनुष्य द्वारा ग्रहण किया हुआ भोजन सूक्ष्म रूप से मानव शरीर एवं मस्तिष्क को प्रभावित करता है। अतः मनुष्य को सदैव सात्विक आहार करना चाहिए।''

वेदों में भोजन सम्बन्धी निर्देश देते हुए कहा गया है कि भोजन की स्तुति करनी चाहिए, तथा बैठकर भोजन करना चाहिए। वेदों के साथ ब्राह्मण

ग्रन्थों में उल्लेख है कि भोजन दो बार दिन में करना चाहिए। वैदिक यज्ञ के लिए दीक्षित व्यक्ति को होम समाप्त होने पर ही भोजन करना चाहिए, उसके पूर्व नहीं। इसी प्रकार आरण्यक ग्रन्थों में भी भोजन–सम्बन्धी कतिपय प्रतिबन्धों का स्पष्ट उल्लेख है। छन्दोग्योपनिषद् में बताया गया कि ''आहार' शुद्ध होना चाहिए तथा भोजन करने के पूर्व और पश्चात् दो बार आचमन करना चाहिए। भोजन में अन्न को देवता मानकर उसके संवर्द्धन की कामना की गई है क्योंकि अन्न में ब्रह्मा का वास होता है। अतः अन्न की ब्रह्मरूप में उपासना करनी चाहिए।''

सत्याचरण

वैदिक आचार–पद्धति में ऋत या सत्य की सर्वोच्च प्रतिष्ठा है। ऋत प्रकृत्ति का वह धर्म है, जिसके द्वारा निर्बाध रूप से प्रकृति के सारे कार्य–व्यापार चलते हैं। ऋतुओं का आगमन, सूर्योदय, दिन और रात्रि आदि सारे प्राकृतिक विधानों की क्रमबद्धता के मूल में ऋत ही है।

ऋग्वेद में सत्य की सर्वोच्च प्रतिष्ठा की गई है। इसके अनुसार सृष्टि की उत्पत्ति के पहले ऋत और सत्य उत्पन्न हुए और सत्य से ही आकाश, पृथ्वी, वायु आदि तत्व स्थिर हैं। सत्य के समक्ष असत्य की प्रतिष्ठा नहीं हो सकती। ऋग्वेद में उपदेश देते हुए कहा गया है–

सत्यस्य नावः सुक्रतमपीयरन्।
धर्मात्मा को सत्य की नाव पार लगाती है।
ऋतस्य पन्थां न तरन्ति दुष्कृतः।

सत्य के मार्ग को दुष्कर्मी नहीं पार कर पाते। अथर्ववेद के अनुसार असत्यवादी वरूण के पाश में पकड़ा जाता है। उसका उदर फूल जाता है। 'शतपथ ब्राह्मण' में सत्य को सर्वोच्च गुण बतलाया गया है। इसके अनुसार असत्य बोलने वाला व्यक्ति अपवित्र हो जाता है। उसे किसी यज्ञ आदि पवित्र कर्मो के लिए अधिकार नहीं रह जाते हैं। जो व्यक्ति सत्य बोलता है, उसका प्रकाश नित्य बढ़ता है।

मृदुता का प्रयोग सदाचार का मूल

किसी भी व्यक्ति के आचरण की परीक्षा उसके मृदु व्यवहार से होती है क्योंकि वाणी वह साधन है जिसके द्वारा मनुष्य के अन्तःकरण की शुद्धता का पता लगता हैं। वेदों में मनुष्यों द्वारा मधुर व्यवहार होने की ईश्वर से प्रार्थना करते हुए कहा गया है–

जिह्वाया अग्रे मधु में जिह्वामूले मधूलकम्।

अर्थात इसमें प्रार्थना की गई है कि मेरी जिह्वा में मधुरता हों और जिह्वा के मूल में अर्थात मानस में मधुर रस का संनिवेश हों।

सदाचरण का तो मूल ही मधुरता है। जो व्यक्ति सदाचारी होता है उसकी जिह्वा में माधुर्य रहता है और वह मन से भी मधुर होता है। जिह्वा द्वारा ही संसार में संधि–विग्रह होते रहे है। जिह्वा की मधुरता पर क्रूरों को भी क्रूरता त्याग कर साधुओं का मार्ग ग्रहण करना पड़ता है। मनुष्य का कर्तव्य हैं कि वह अपने को सर्वप्रिय बनाने का प्रयन्न करें। घर में आना या जाना, वार्तालाप करना या नेत्रों द्वारा किसी को देखना – सब कुछ मधुर हों।

गृहस्थ व्यक्ति को शिक्षा देते हुए वेद भगवान कहते हैं कि वह पत्नी को ऐसी प्रेम भरी दृष्टि से देखे कि वह प्रेम की मधुरता के वश में हो स्वप्न में भी किसी परपुरूष की कामना न करे।

मधुर वचनों के प्रयोग से व्यक्ति की अन्तःकरण की कलुषता का नाश होता है और व्यक्ति का अन्तःकरण पवित्र होता है।

वाचा वदामि मधुमद् भूंयासं मधुसंदृशः।

यज्ञ ही सदाचार का आधार

उपनिषदों एवं ब्राह्मण ग्रन्थों के अनुसार सनातन– धर्म का विशाल भवन यज्ञ की ही सुदृढ़ नीव पर खड़ा है। मनुष्य द्वारा किये गये श्रद्धापूर्वक कर्म–दान–पुण्य, तप श्रम, स्वावलम्बन, हवन–पूजन, मैत्री–सहयोग और परोपकार ये सभी यज्ञ के अन्तर्गत आते हैं। शतपथ ब्राह्मण के अनुसार ''यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म'' अर्थात् यह ही श्रेष्ठ कर्म है और यही सदाचार है जो कुछ संसार में कर्म हो रहा है, उसका उत्तमांश यज्ञ ही है। यज्ञ को मानव कल्याण का साधन मानते हुए कहा है–

सर्वस्मात पाप्मनो निर्मुच्यते,
य एवं विद्वानग्निहोत्रं जुहोति।
सर्वो वै पापकृत्यां सर्वो ब्रह्महत्यामपमृजन्ति
योऽश्वमेधेन यजते।।

अर्थात् यज्ञ करने वाला पाप का विनाश करता है। अग्निहोत्र यज्ञ करने वाला पापों से मुक्त हो जाता है और जो अश्वमेध यज्ञ करता हैं, वह पाप और ब्रह्महत्या से भी मुक्त हो जाता है। वेदों में यज्ञ को सृष्टि का उत्पत्ति स्थान कहा गया है।

अयं यज्ञो भुवनस्य नाभि।

यह यज्ञ अध्यात्म के साथ व्यवहार का परलोक के साथ इहलोक का और समृद्धि के साथ त्याग का सामंजस्य स्थापित करता है। यह हमें स्वस्थ, शिष्ट, सदाचारी एवं सुंसंस्कृत जीवनयापन का संदेश देता है।

यज्ञ ब्रह्मा, विष्णु और शिवरूप है, अग्नि, सूर्य, इन्द्र, वरूण, वायु, सत्व–रज–तम, तप, तेज, ज्ञान, वेद–मंत्र ध्यान्, पुरूषार्थ–द्रव्य–दान, योग सयंम–स्वाध्याय त्याग, सफलता ब्रह्मचार्य, माता–पिता, आचार्य तथा सत्य और सदगुण और सदाचार आदि सभी यज्ञ–पुरूष के ही परिवार है।

ऋग्वेद में सत्य की उत्पत्ति ही यज्ञ से मानी गई है। अर्थात् यज्ञ में प्रज्वलित तप से ही सत्य की उत्पत्ति हुई है।

नारी का आदर श्रेष्ठ सदाचारिता

सदाचारी व्यक्ति का सबसे बड़ा गुण है नारी का सम्मान करना वेदों में नारी को बड़े आदर की दृष्टि से देखा गया है। तैत्तिरीय ब्राह्मण के अनुसार धर्मपत्नी साक्षात् लक्ष्मी का स्वरूप है। उसके बिना यजमान यज्ञ के अयोग्य होता है। क्योंकि वह उसकी अर्द्धांगिनी है–

अर्द्धो वा एष आत्मनः यत् पत्नी।

यजमान पत्नी को ताण्डयमहाब्राह्मण में श्रद्धा नाम से अभिहित किया गया हैं। श्रद्धा पत्नी है और सत्य यजमान, उन दोनों की उत्तम जोड़ी स्वर्गादी सम्पूर्णलोकों को जीत सकती है।

ऋग्वेद के दशम मण्डल का 151वां सूक्त श्रद्धा सूक्त के नाम से प्रसिद्ध है। उसमें मनुष्य की उन्नति का प्रधान कारण श्रद्धा को माना गया है। श्रद्धा के द्वारा अग्नि प्रज्वलित होती है और श्रद्धा के द्वारा यज्ञ सामग्री की आहुति दी जाती है। इतना हीं नहीं, श्रद्धा सम्पूर्ण ज्ञान–वैराग्य, धर्म–कीर्ति, धन–ऐश्वर्य आदि सबसे श्रेष्ठ है। श्रद्धा की महिमा बताते हुए कहा गया है–

श्रद्धायाग्निः समिध्यते श्रद्धया हूयते हविः।
श्रद्धां भगस्य मूर्धीन वचसा वेदयामसि।।

अतिथि–सेवा श्रेष्ठ सदाचारिता

'अतिथि देवो भव' उपनिषदों में अतिथि को देवता के सदृश माना गया है। अतिथि को वैश्वानर अग्नि का रूप बताते हुए कहा गया है–

आशाप्रतीक्षे संगतॅसूनृतां च
इष्टापूर्ते पुत्रपशु–ॅश्च सर्वान्।
एतद् वृडंक्ते पुरूषस्याल्पमेधसा,
यस्यानश्नन् वसति ब्राह्मणो गृहै।।

अर्थात् अतिथि को अर्ध्यपाद्य देकर सन्तुष्ट करना चाहिए। किसी भी गृहस्थ के घर में ब्राह्मण अतिथि का बिना भोजन किये रहना अत्यन्त अमंगलकारी है तथा उसकी आशा–अभिलाषा, इष्टापूर्ति एवं पुत्र, पशु आदि सभी का नाश करने वाला है।

दान–कर्म सदाचार का आधार

वेदों में सदाचारी व्यक्ति के लिए सर्वश्रेष्ठ दान कर्म को बताया है। वेदों में कहा गया है कि जो व्यक्ति दानवीर होता है उसके ऐश्वर्य को कोई छीन नहीं सकता अर्थववेद में दान देने वाले को कहा गया है–

न ते वर्तास्ति राधस इन्द्र देवों न मर्त्यः।
यद्यि त्ससि स्तुतो मघम्।।

अर्थात् तेरी प्रवृति यदि जगत् के हितार्थ दान देने की हो तो तेरे ऐश्वर्य को बढ़ने से रोकने का सामर्थ्य देव भी नही रखते। ऋग्वेद में भी कहा गया है–

दक्षिणावन्तो अमृत भजन्ते।

उपनिषदों में भी कहा गया है। श्रद्धापूर्वक दान देना चाहिए अश्रद्धापूर्वक दान नही देना चाहिए। प्रतिष्ठा के लिए (इष्टापूर्ते कर्मो के लिए भी) दान देना चाहिए, लज्जापूर्वक दान देना चाहिए। भय मानते हुए दान देना चाहिए तथा संवित् (मैत्री आदि के कार्य के निमित्त से एवं वचनपूर्ति) के लिए दान देना चाहिए।

परूष–वचन का त्याग

वेदों में व्यक्ति को आदेश देते हुए कहा गया है कि व्यक्ति को कठोर वचन कभी भी नहीं बोलने चाहिए। कठोरता का नाम पारूष्य है। परूषता मन, वाणी और शरीर तीनों प्रकार से होती है। किसी को गाली देना, कटुवचन कहना, ताने मारना, उद्वेगकारी वचन बोलना आदि वाणी की कठोरता या वाक्य पारूष्य है। विनय का अभाव शरीर की कठोरता तथा क्षमा और दया के विरूद्ध प्रति हिंसा और क्रूरता के भाव को मन की कठोरता कहते हैं। कठोर वचन विष बुझे बाण के समान होते हैं। जैसी चुभन इन विषमय बाणों के लगने से शरीर और मन में होती है वैसी ही पीड़ा बल्कि उससे भी अधिक पीड़ा दूसरे के प्रति कठोर वचनों के प्रयोग करने से होती हैं। अतः वाणी का प्रयोग अत्यन्त सोच–समझकर बड़ी सावधानी से करना चाहिए। वाणी में सरस्वती देवी का अधिष्ठान रहता है। इसलिए मनुष्य को कभी भी कठोर वचनों का प्रयोग नहीं करना चाहिए। प्रिय लगने वाली सत्यता से परिपूर्ण वाणी का प्रयोग करना चाहिए। ऋग्वेद में कहा गया है–

अध्वर्यवो यः शतं शम्बरस्य पुरो विभेदाश्मनेव पूर्वीः।
यो वर्चिनः शतभिन्द्रः सहस्तत्रमपावपद् भरता सोममस्मै।।

निष्कर्ष

वेदोंक्त सदाचार का स्वरुप यह शोध पत्र भारतीय संस्कृति के मूल आधार वेद के सदाचार के पक्ष को प्रकाशित कर रहा है। जिसमें सात्विक आहार सत्याचरण विधायक तथा नारी के आदर श्रेष्ठ सदाचार इता के साथ–साथ दान कर्म अतिथि सेवा की महिमा का वर्णन स्पष्ट किया गया है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *पद्म पुराणम्, मूलमात्र, चौखम्भा संस्कृत संस्थान, वाराणसी*
2. *अष्टादश पुराण दर्पण संक्षिप्त पुराण कथा संग्रह, संकलित–श्री पण्डित ज्वालाप्रसाद मिश्र, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थानम्, नई दिल्ली*
3. *श्री स्कन्द महापुराणम्, भूमिका लेखक–राजेन्द्र नाथ शर्मा, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थानम्, नई दिल्ली*
4. *देवी भावगतम्, श्री रामतेज पाण्डेय कृत पीताम्बरा हिन्दी टीका सहित, चौखम्भा विद्याभवन, वाराणसी*
5. *पुराण तत्व मीमांसा, श्री कृष्ण मणि त्रिपाठी, चौखम्भा विद्याभवन, वाराणसी*
6. *पुराण विमर्श:, आचार्य बलदेव उपाध्याय, चौखम्भा विद्याभवन, वाराणसी*
7. *नारद पुराण, श्रीराम शर्मा आचार्यकृत हिन्दी टीका, चौखम्भा विद्याभवन, वाराणसी*
8. *श्री वाल्मीकीय रामायण (बालकाण्डम्), डॉ. श्रीमती समीक्षा दवे, महालक्ष्मी प्रकाशन, आगरा*
9. *श्रीमद् वाल्मीकीय रामायण, पाण्डेय प. रामनारायण शास्त्री, गीता प्रेस, गोरखपुर*
10. *मूलरामायणम् (महर्षि वाल्मीकिकृत), डॉ. रामप्रकाश सारस्वत, महालक्ष्मी प्रकाशन, आगरा*
11. *उत्तर रामचरितादर्श, डॉ. रामशंकर द्विवेदी, चौखम्भा विद्याभवन, वाराणसी*
12. *रामचरितामृतम, प्रणेता–प. चारूदेव शास्त्री, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थानम्, नई दिल्ली*
13. *मनुस्मृतिः (धर्मशास्त्र), पण्डित रामेश्वर भट्टकृत सरल भाषा टीका समलंकृत, चौखम्भा विद्याभवन, वाराणसी*